"विद्यार्थियों में शैक्षिक तनाव आक्रामक व्यवहार और सामाजिक संवेदनशीलता: एक समीक्षात्मक अध्ययन"

महेश चन्द जाटव

प्रवक्ता, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजूकेशन, पदेवा करौली (राज.)

मुकेश कुमार वर्मा

प्रवक्ता, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजूकेशन, पदेवा करौली (राज.)

प्रस्तावना:

प्राचीन काल से ही भारत समाज के पूर्ण विकास के लिए शिक्षा के महत्व के प्रति जागरूक रहा है। सम्पूर्ण विश्व में भारत का अपनी गौरवशाली संस्कृति और इतिहास के कारण अद्वितीय स्थान है। शिक्षाविदों के अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो स्कूल छोड़ने के बाद भी काम आए। इसलिए मनुष्य की गुणात्मक शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा पूरी होने के लिए यह आवश्यक है कि उसका वातावरण एवं समाज शान्तिपूर्ण हो, लेकिन आज के दौर में शांतिपूर्ण वातावरण की बात करना कल्पना मात्र ही है।

आज प्रत्येक व्यक्ति दूसरे पर अधिकार करना चाहता है, जिसके कारण वह दूसरों को परेशान करता है, हिंसा करता है। कभी-कभी तो वह उन्हें मृत्यु लोक भी पहुँचा देता है। हिंसा का विकराल रूप आतंकवाद में परिलक्षित होता है। आज जहाँ भी देखो वहाँ तबाही का मंजर है। इस विध्वंसक दौर से हमें सिर्फ शिक्षा ही बाहर निकाल सकती है। शिक्षा में भी शांति शांतिपूर्ण वातावरण में ही व्यक्ति का विकास सम्भव है।

जैन दर्शन, (2017) के अनुसार शांति एक छोटा सा शब्द है जिसकी व्याख्या अम्बर के समान वृहदाकार, सागर के समान अमाप्य है। शांति व्यक्ति का सहज स्वभाव है। शान्ति केवल युद्ध का अभाव नहीं बल्कि समरसता एवं रचनात्मक वातावरण का निर्माण है। वस्तुतः शांति व्यक्तिगत, सामाजिक एवं वैश्विक शांति की वह समग्रता है जिसमें हिंसा, युद्ध, शोषण का अभाव करुणा, मैत्री एवं प्रेम रूपी गुणों का नैसर्गिक विकास हो। शान्ति के शाब्दिक अर्थ के रूप में 'शान्ति' शब्द संस्कृत के "शम्" धातु से बना है। जिसका अर्थ है 'शमन करना' अर्थात् बुरा प्रभाव हटाना। सुख कल्याण की प्राप्ति करना। वेदों, उपनिषदों एवं

जैनागमों में शान्ति शब्द विभिन्न स्थलों पर विभिन्न प्रसंगों के रूप में सकारात्मक अर्थों के रूप में उपयोग किया जाता रहा है।

सामाजिक संवेदनशीलता किसी व्यक्ति की उस कुशलता का वर्णन है जिससे वह व्यक्ति सामाजिक वार्तालाप एवं अन्य लोगों के लिए सामाजिक सम्मान प्रदान करने हेतु विभिन्न संकेत एवं संदर्भों की पहचान ग्रहण करने एवं समझने की प्रक्रिया में सक्षम है।

किसी भी देश की प्रगति या विकास वहाँ के छात्रों की शिक्षा पर निर्भर करता है। आजकल के छात्रों में शैक्षिक तनाव के कारण उनमें आक्रामक व्यवहार की प्रवृत्ति बढ़ती ही जा रही है। अखबारों या दूरदर्शन के माध्यम से देखते हैं कि छात्रों के द्वारा किया जाने वाला आक्रामक व्यवहार उनके और उनके अभिवावकों के लिए बहुत ही घातक है। छात्र आपस में झगड़ते हैं, सड़कों पर हिंसा फैलाते हैं, और कभी-कभी तो हत्या भी कर देते हैं।

अतः इस गम्भीर समस्या की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। आक्रामक व्यवहार के कारण ही छात्र समाज से दूर रहते हैं। उनमें सामाजिक संवेदनशीलता का पतन होता है। आज के छात्र सोशल मीडिया पर तो दोस्त खोजते हैं, लेकिन उनके आस-पड़ोस में जो रहते हैं, उनके बारे में नहीं सोचते। डिजिटल दुनियाँ हकीकत की दुनियाँ से ज्यादा लुभावनी लगती है।यही कारण है कि उनमें सामाजिक संवेदनशीलता की कमी पायी जाती है।

इन समस्याओं का निवारण हम शांति के द्वारा कर सकते हैं, क्योंकि जब छात्रों में शांति की समझ विकसित होगी तो उनका तनाव भी कम होने लगेगा। अगर उनमें तनाव कम होने लगेगा तो उनका आक्रामक व्यवहार भी कम हो जायेगा। आक्रामक व्यवहार का बड़ा कारण तनाव भी है। जब छात्रों का आक्रामक व्यवहार कम होगा तो उनमें सामाजिक संवेदनशीलता का गुण भी विकसित होने लगेगा।

अतः आज के विद्यार्थियों को शान्ति शिक्षा देने की आवश्यकता है जिससे वे अपना आज और कल को खुशहाल बना सकें।

उपयोगिता-

वर्तमान दौर प्रतिस्पर्धा और भौतिकवादिता का समय है। प्रत्येक देश, समाज और नागरिक एक दूसरे से आगे बढ़ने की होड़ में लगे रहते हैं। इसी होड़ में लोग एक-दूसरे के साथ

हिंसात्मक रवैया अपनाने तथा दूसरे को अपने बल में करने की कोशिशें करते हैं। कुछ लोगों को उनके जीवन के लिऐ अनिवार्य चीजों से वंचित होना पड़ता है।

आज के युग में कहीं नक्सलवादी हमला, कहीं अलगाव की माँग तो कहीं आतंकी घटनाएँ हो रही है। यह घटनाएँ वयस्कों तक ही सीमित नहीं हैं, अपितु विद्यार्थियों में भी ऐसी घटनाएं बढ़ती ही रही हैं। विद्यार्थियों के मध्य तनाव, आक्रामक व्यवहार एवं उनका सामाजिक रूप से असंवेदनशील होना भविष्य के लिए और आज के लिए एक विकराल समस्या उत्पन्न कर देगा। हम हाथ पर हाथ रखकर नहीं देख सकते। हमें मिलकर विचार करने की आवश्यकता है।

सर्वेक्षण के आधार पर कहा जा सकता है कि अभी तक शिक्षा, शैक्षिक तनाव, आक्रामक व्यवहार एवं सामाजिक संवेदनशीलता पर स्वतंत्र रूप में अध्ययन किया जाता रहा है लेकिन सभी का एक साथ अध्ययन नहीं किया गया है।

अतः उपर्युक्त विवेचन के आधार पर शोधार्थी के मस्तिष्क में कुछ प्रश्न उत्पन्न हुयें जो प्रस्तुत शोध के चयन का कारण बने। जो कि निम्नानुसार है-

1.क्या छात्रों के शैक्षिक तनाव पर क्रिया आधारित शिक्षा कार्यक्रम का प्रभाव पड़ता है?

2.क्या छात्रों के आक्रामक व्यवहार पर क्रिया आधारित शांति शिक्षा कार्यक्रम का प्रभाव पड़ता है?

3.क्या छात्रों की सामाजिक संवेदनशीलता पर क्रिया आधारित शांति शिक्षा कार्यक्रम का प्रभाव पड़ता है?

उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तरों की उपयोगिता वर्तमान समय में प्रभावी साबित हो रही है। आज हमऐसे युग में जीवन व्यतीत कर रहे हैं जहाँ हर दिन ऐसी घटनाएँ घटित होती हैं। इन समस्त घटनाओं का एक प्रमुख कारण आन्तरिक शांति का अभाव माना जाता है।

आज कोई भी व्यक्ति आन्तरिक रूप से शांत नहीं है। विद्यार्थियों में भी शांति का अभाव पाया जाता है। विद्यार्थियों का शैक्षिक तनाव उनमें आक्रामक व्यवहार को बढ़ावा देता है। आक्रामक व्यवहार के परिणामस्वरूप छात्र हिंसात्मक क्रियाएँ करता है। इसी कारण उसमें सामाजिक संवेदनशीलता का पतन होता जा रहा है।

शैक्षिक तनाव

शैक्षिक तनाव को मुख्य तनाव के रूप में देखा जा सकता है जो कि शैक्षिक मांगों की प्रकृति से उत्पन्न एवं नकारात्मक परिणामों अवसाद और शारीरिक रोग से जुड़ा होता है।

शैक्षिक तनाव से हमारा आशय विभिन्न शैक्षिक परिस्थितियों से है जिनमें विद्यालय जाना, कक्षा में बैठना, गृहकार्य करना, परीक्षा की तैयारी करना तथा परीक्षा के परिणाम को लेकर तनाव करने इत्यादि से होता है।

आक्रामक व्यवहारः

व्यवहार की वह सीमा जिसका परिणाम स्वयं को एवं दूसरों को तथा वातावरण में उपस्थित वस्तुओं को शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक दोनों रूप से नुकसान पहुंचा सकता है।

आक्रामक व्यवहार से हमारा तात्पर्य विद्यार्थियों द्वारा किये जाने वाले विध्वंसात्मक कार्य, अभद्र व्यवहार, आपस में झगड़ना तथा हिंसात्मक क्रियाओं से है।

सामाजिक संवेदनशीलता

सामाजिक संवेदनशीलता को मनुष्यों की उस क्षमता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो दूसरों के विचारों और अपेक्षाओं के अनुसार व्यवहार को समायोजित करने में सक्षम हो।

सामाजिक संवेदनशीलता से हमारा तात्पर्य विद्यार्थियों द्वारा सामाजिक प्राणी होने के नाते किये जाने वाले व्यवहार तथा समाज के प्रति उसके कर्तव्यों, उत्तरदायित्वों तथा समाज के संदर्भ में उसकी जागरुकता से है।

अध्ययन के उद्देश्य

1.माध्यमिक स्तर पर क्रिया आधारित शिक्षा का निर्माण करना।

2.माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में शैक्षिक तनाव पर क्रिया आधारित शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करना।

3.माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में आक्रामक व्यवहार पर क्रिया आधारित शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करना।

4.माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक संवेदनशीलता पर क्रिया आधारित शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिसीमाएँ

समस्या का स्वरूप साधारणतः अधिक व्यापक होता है। समस्या का व्यावहारिक रूप में अध्ययन करने के लिए समस्या की परिसीमाऐं अत्यंत आवश्यक होती है। समय एवं साधनों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन की निम्नलिखित परिसीमाएँ है-

1.समस्या के अध्ययन हेतु 'करौली जिले' के एक विद्यालय के छात्रों को ही लिया जायेगा।

2.यह अध्ययन माध्यमिक स्तर तक ही सीमित है।

अध्ययन विधिः

प्रस्तुत शोधकार्य में प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन में न्यादर्श को सोद्देश्य विधि से चयनित किया गया है। सम्पूर्ण न्यादर्श को समूहों (1-नियंत्रित समूह, 2-प्रयोगात्मक समूह) में रखा गया है। दोनों समूहों पर पूर्व परीक्षण के अन्तर्गत आश्रित चरों (शैक्षिक तनाव, आक्रामक व्यवहार तथा सामाजिक संवेदनशीलता) का उपयुक्त उपकरणों द्वारा आंकलन किया जायेगा। तत्पश्चात् प्रयोगात्मक समूह को क्रिया आधारित शांति शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत अध्ययन कराया गया। अन्त में पश्च परीक्षण किया गया। इसके अन्तर्गत एक बार पुनः आश्रित चरों (शैक्षिक तनाव, आक्रामक व्यवहार तथा सामाजिक संवेदनशीलता) गया का उपयुक्त उपकरणों द्वारा आंकलन किया गया। इसकी रुपरेखा निम्नवत हैः-

अध्ययन का संरचनात्मक प्रारूप

<table>
<tr><td>क्र.सं.</td><td>समूह</td><td>परीक्षण</td><td>उपचार</td><td>अवधि</td><td>परीक्षण</td><td></td></tr>
<tr><td rowspan="2">1</td><td rowspan="2">प्रयोगात्मक समूह</td><td rowspan="2">पूर्व परीक्षण</td><td rowspan="2">क्रिया आधारित शिक्षा द्वारा अध्ययन</td><td>चक अवधि</td><td>सम्पूर्ण अवधि</td><td rowspan="2">पश्च परीक्षण</td></tr>
<tr><td>40 मिनिट</td><td>90 दिवस</td></tr>
</table>

2	नियंत्रित समूह	पूर्व परीक्षण	किसी भी प्रकार का उपचार नहीं दिया जायेगा	पश्च परीक्षण

न्यादर्श चयन प्रक्रिया

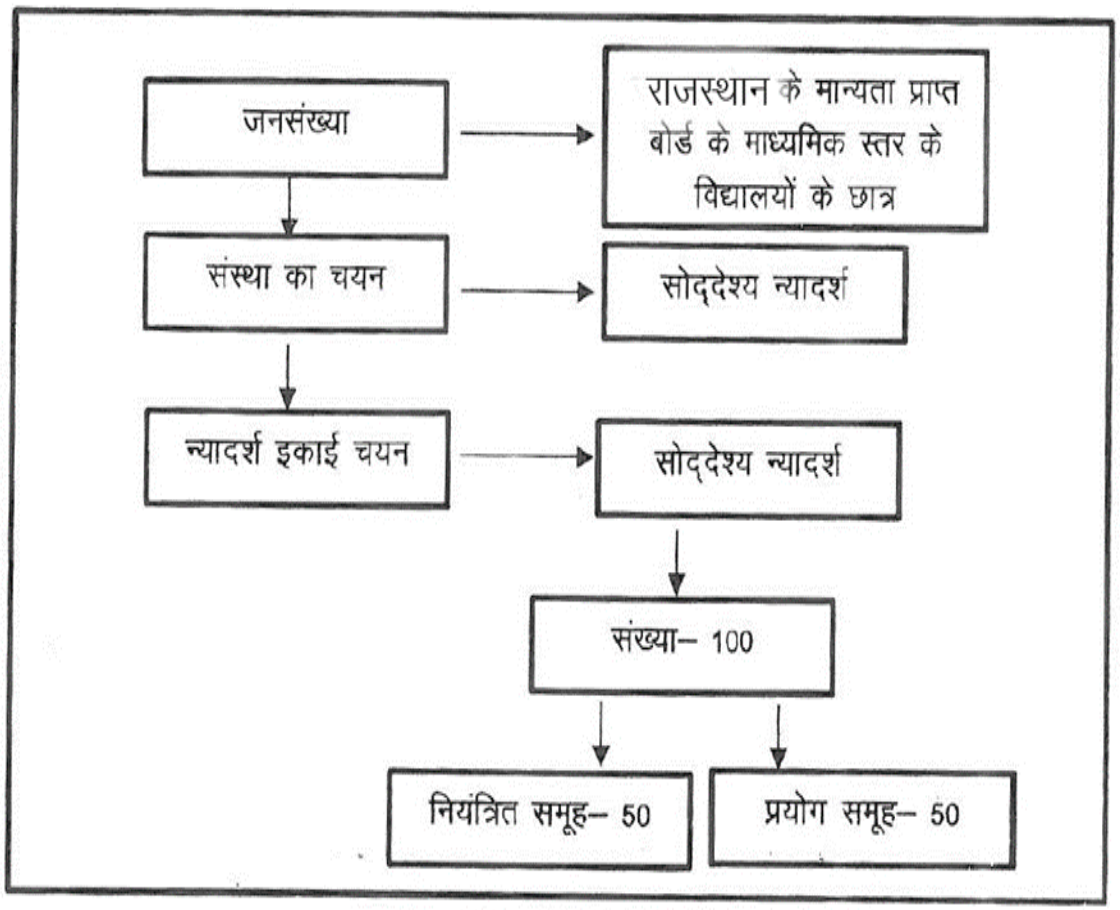

विकासात्मक चरणः

क्रिया आधारित शिक्षा के अन्तर्गत समस्त पाठयोजनाओं को शोधार्थी द्वारा इस प्रकार निर्मित किया गया है। कि विद्यार्थियों में प्रेम, सद्भाव, सहिष्णुता, विश्वास, न्याय, सहयोग की भावना का विकास हो। क्रिया आधारित शिक्षा को विशेषज्ञ की देखरेख में उचित मार्गदर्शन से पूर्ण किया जायेगा। निर्मित पाठों को विभिन्न प्रकार की क्रियात्मक गतिविधियों के द्वारा प्रस्तुत किया जायेगा। जैसे- वैज्ञानिक प्रायोगिक विधियाँ, अभिनय, नाटक, खेल, चलचित्र

प्रदर्शन, स्लाइड शो, ध्वनि प्रदर्शन इत्यादि। क्रिया आधारित शिक्षा का निर्माण शोधार्थी द्वारा निम्न प्रकार से किया गया है।

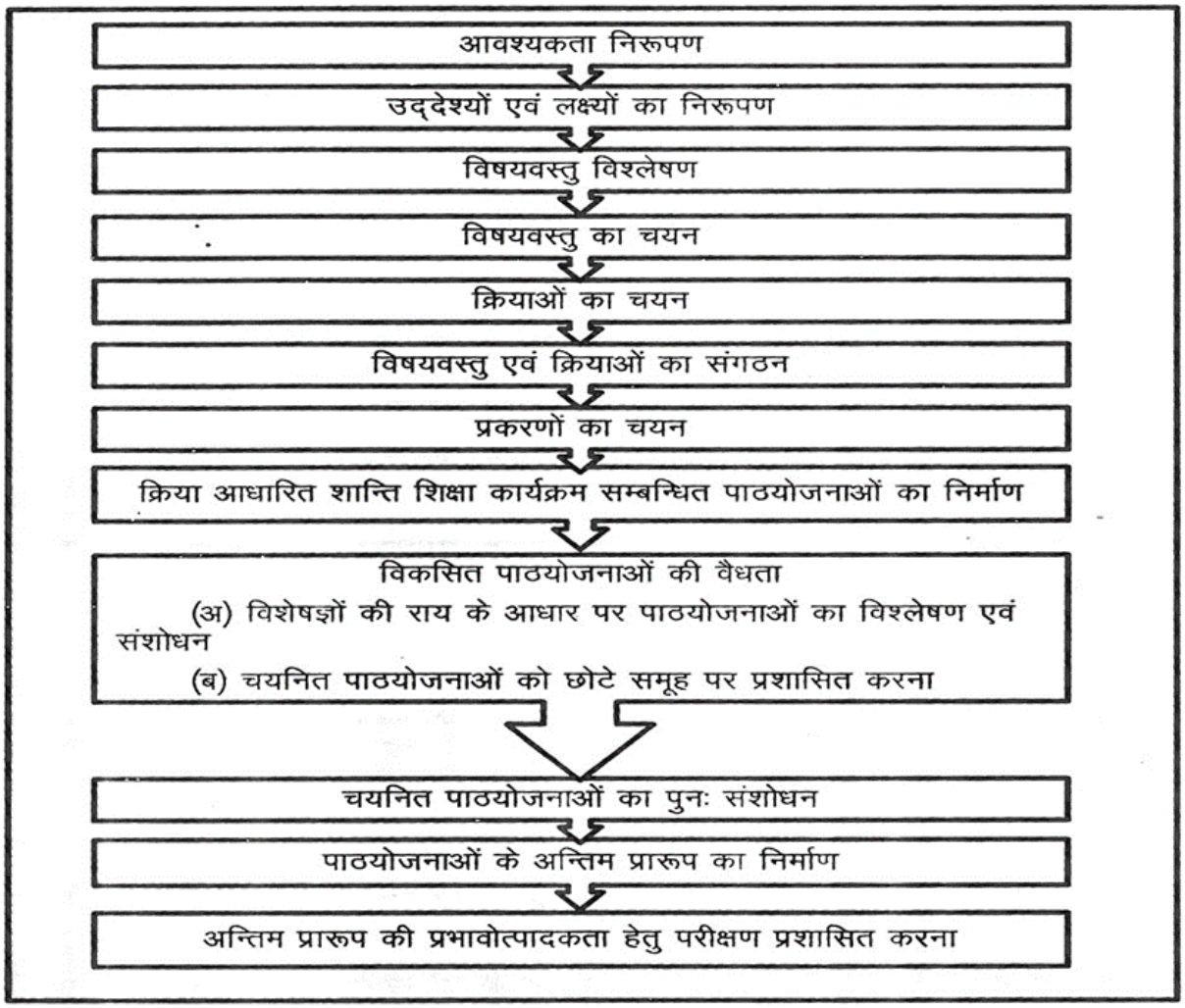

क्रिया आधारित शांन्ति शिक्षा कार्यक्रम के विकास पद

प्रयोगात्मक चरणः

प्रयोगात्मक चरण क्रिया आधारित शिक्षा को शुरु करने से पहले हम दोनों समूहों पर पूर्व परीक्षण के अन्तर्गत आश्रित चरों शैक्षिक तनाव, आक्रामक व्यवहार तथा सामाजिक संवेदनशीलता का परीक्षण किया गया। पूर्व परीक्षण के पश्चात् हम क्रिया आधारित शिक्षा द्वारा निर्मित पाठों का प्रयोगात्मक समूह पर अध्ययन। प्रत्येक पाठ को 40 मिनट प्रदान की गई। प्रयोग के अन्त में पुनः आश्रित चरों शैक्षिक तनाव आक्रामक व्यवहार तथा सामाजिक संवेदनशीलता का परीक्षण किया गया है।

आंकलन या मूल्यांकन चरणः

दोनों समूहों से प्राप्त प्रदत्तों का संकलन पूर्व परीक्षण तथा पश्च परीक्षण के द्वारा किया गया। विद्यार्थियों में हुए व्यवहार परिवर्तन का आंकलन शोधार्थी द्वारा निर्धारित किये गये शोध उद्देश्यों के आधार पर किया गया है।

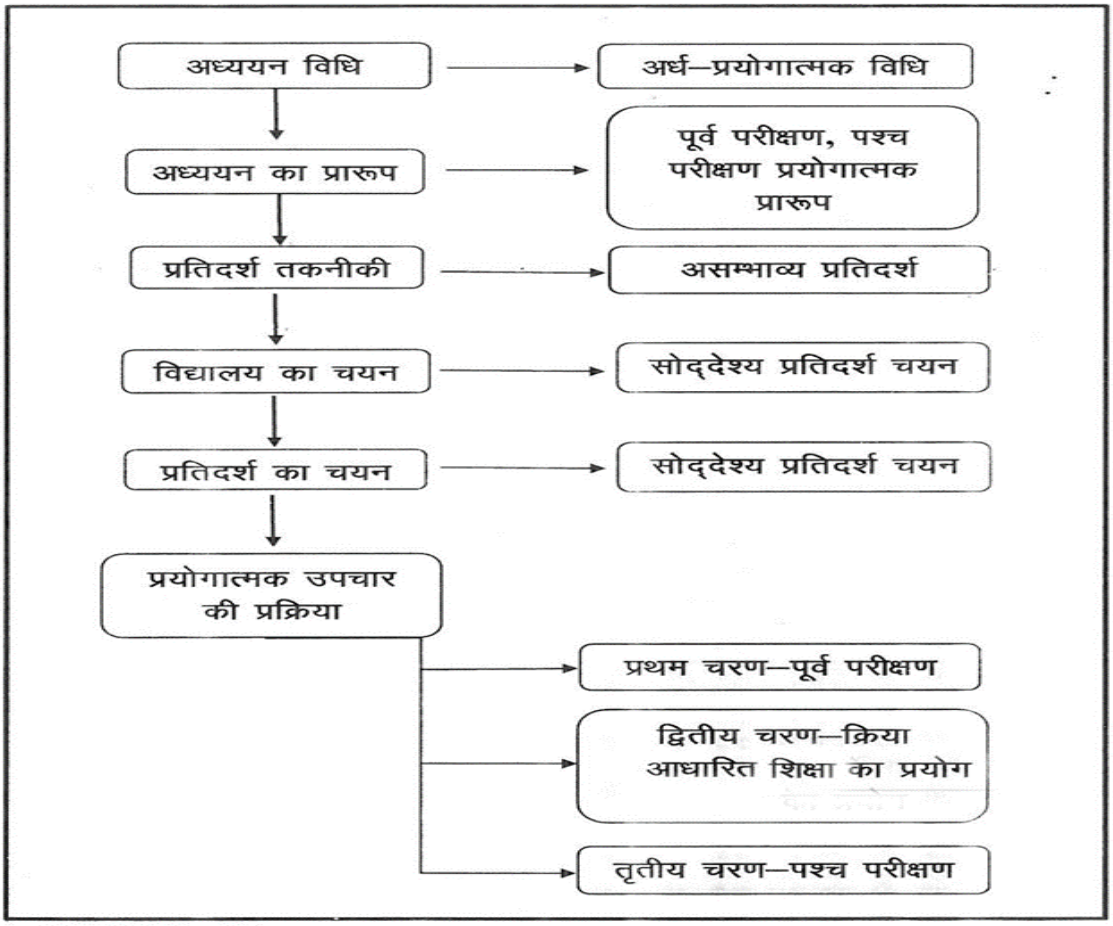

शोध अभिकल्प का प्रारूप

शोध का निष्कर्षः-

उपर्युक्त शोध के परिणाम नीति निर्धारकों, अध्यापकों, विद्यार्थियों, पाठ्यक्रम निर्माण कर्ताओं और अभिवावकों को उनके क्रियाकलापों में सार्थक परिवर्तन करने में सक्षम है। नीतिनिर्धारक तथा अध्यापक इस शोध के परिणाम स्वरूप शिक्षा को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने की दिशा में कार्य कर सकते हैं। पाठ्यक्रम निर्माणकर्ता उपर्युक्त शोध के परिप्रेक्ष्य में विद्यालय पाठ्यक्रम में यथोचित परिवर्तन कर सकते हैं। शिक्षक अपनी शिक्षण विधियों तथा अभिवावक

विद्यार्थियों के उचित दिशानिर्देशन में उपयुक्त शोध के परिणामों का उपयोग कर सकते हैं। विद्यालय सम्बन्धित प्रशासनिक कार्य भी इस शोध के परिणामों से लाभान्वित हो सकते हैं। विद्यार्थी भी शोध के परिणामों से अपने व्यवहार, मूल्यों, नीतियों में यथोचित परिवर्तन ला सकते हैं।

REFERENCES

- Bender L., Walia G., Kambhampaty K., Nygard K.E., Nygard T.E. (2012). Social sensitivity correlations with the effectiveness of team process performance: an empirical study, Proceedings of the ninth annual international conference on International computing education research, Auckland, New Zealand
- Berkowitz, L. (1993). Aggression: Its Causes, Consequences, and Control. New York: McGraw-Hill.
- Bjorkqvist, K., Lagerspetz, K.M.J., and Osterman, K. (1992). The Direct and IndirectAggression Scales. Abo Akademi University, Vasa, Finland.
- Chen, X., Huang, X., Wang, L., & Chung, L. (2012). Aggression, peer relationshipsand depression in Chinese children: A multiwave longitudinal study. The Journal ofChild Psychology and Psychiatry, 53 (8). doi:10.1111/j.1469-7610.2012.02 576.X
- Fry, P. S. (1976) Children's Social Sensitivity. Altruism, and Self-Gratification, TheJournal of Social Psychology,98:1, 77-88, DOI: 10.1080/00224545.1976.9923368
- Harris, I. M. (1998). Peace Education, Jefferson, North Carolina: Me Farland&co..
- Jain, I. (2017). Elements of Peace Education in Jain Darshan and Their Relevance inSchool Curriculum, Unpublished Ph.D. Thesis, Mohanlal Sukhadiya University,Udaipur, Retrieved from: http://hdl.handle.net/10603/203280
- Johal, S. K., & Kaur, K. (2015). Adolescent aggression and parental behaviour: A correlational study. ISOR Journal or Humanities and Social Sciences, 20(7), 22-27
- Johs, S. (1979). Social Sensitivity as a Factor in the Teaching Process. A Theoretical Discussion and an Experimental Contribution, Scandinavian Journal of Educational Research, 23:3, 131-150, DOI: 10.1080/0031383790230304